न्यूज़ टाइम्स पोस्ट

वर्ष : 03 अंक : 21 हिन्दी पाक्षिक 01 - 15 अप्रैल, 2019 मूल्य :₹ 40 www.newstimespost.com

UPHIN/2016/71925

मिशन -2019

दावों-वादों की बौछार

साक्षात्कार

शिक्षा का बाजारीकरण
चिंताजनक : डॉ. एस.पी. सिंह

उपलब्धि

मिशन शक्ति : अंतरिक्ष में सुपरपावर बना भारत

विशेष

उच्च शिक्षा : कम नहीं अवसर

उच्च शिक्षा : कम नहीं अवसर

पिछले कुछ सालों में इंजीनियरिंग, मेडिकल और मैनेजमेंट वाले युवाओं का रुझान सिविल सेवा की ओर काफी बढ़ा है और वे इस परीक्षा में बेहतर रिजल्ट भी दे रहे हैं। सिविल सेवा परीक्षा के आंकड़े इस बात के गवाह हैं। वर्ष 2010 के बाद से IAS मुख्य परीक्षा में सफलता प्राप्त करने वाले इंजीनियरों की संख्या में लगातार वृद्धि हुई है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि वर्ष 2017 की सिविल सेवा परीक्षा में अव्वल आए 20 परीक्षार्थियों में से 19 इंजीनियर और एक डॉक्टर हैं।

सिविल सेवा में सफलता की गारंटी बने मेडिकल और इंजीनियरिंग

डॉ. भरत राज सिंह
महानिदेशक-तकनीकी,
स्कूल आफ मैनेजमेंट साइंसेज, लखनऊ
मो. 9935025825

उच्च शिक्षा भविष्य में आगे बढ़ने के लिए बहुत से रास्ते खोलती है। यह हमारे ज्ञान के स्तर, तकनीकी कौशल और नौकरी में उच्च पद को प्राप्त करने में हमें सामाजिक, मानसिक और बौद्धिक रूप से मजबूत बनाती है। प्रत्येक छात्र अपने जीवन में कुछ अलग करने का सपना रखता है। कभी-कभी कुछ माता-पिता भी अपने बच्चे को बड़ा होकर डॉक्टर, इंजीनियर, आईएएस व पीसीएस अधिकारी या अन्य उच्च पदों पर देखना चाहते हैं। सभी के सपनों को सच करने का केवल एक ही रास्ता है, अच्छी शिक्षा। इस प्रतियोगी संसार में, सभी के लिए शिक्षा प्राप्त करना बहुत आवश्यक है, अतः नौकरी और अच्छा पद प्राप्त करने में उच्च शिक्षा का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है।

प्रतिष्ठित सिविल सेवा परीक्षा, जिसे आम बोलचाल में IAS और PCS परीक्षा के रूप में जाना जाता है, परंपरागत रूप से यह मानविकी पृष्ठभूमि के उम्मीदवारों के लिए एक वर्चस्व वाला क्षेत्र माना जाना जाता था। हालांकि हाल के दिनों में आईएएस परीक्षा के पैटर्न में बदलाव के बाद यह स्थिति लगभग पलट चुकी है। वर्ष 2010 के बाद से इस परीक्षा में तकनीकी और मेडिकल संवर्ग के उम्मीदवारों की संख्या में विशेष रूप से वृद्धि हुई है। यह स्थिति इसलिए विशेष रही है, क्योंकि इंजीनियरों ने न केवल सिविल सेवाओं की तैयारी में दिन-प्रतिदिन वृद्धि की है, बल्कि इस परीक्षा में नियमित रूप से बड़ी संख्या में सफलता भी प्राप्त कर रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में, अंतिम चयन के आंकड़ों के अनुसार आईएएस प्रीलिम्स और आईएएस मेन्स के नतीजों में इंजीनियर स्नातकों ने अपनी मजबूत पकड़ बना ली है।

विशेषज्ञों के अनुसार, इसका मुख्य कारण है इंजीनियरिंग क्षेत्र में रोजगार के अच्छे अवसरों की कमी। ऐसे में विशेषज्ञ इसे एक अस्थायी घटना मानते हैं, लेकिन वर्ष 2010 के बाद से IAS मुख्य परीक्षा में सफलता प्राप्त करने वाले इंजीनियरों की संख्या में लगातार वृद्धि हुई है, जिन्हें अब नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि वर्ष 2017 की सिविल सेवा परीक्षा में अव्वल आए 20 परीक्षार्थियों में से 19 इंजीनियर और एक डॉक्टर है। IAS प्रारंभिक परीक्षा के आंकड़े इस

शैक्षणिक पृष्ठभूमि — सिविल सेवा परीक्षा चयन

	2009	2010	2011	2012	2013
मानविकी	91.09 %	37.10%	27.20%	40.10%	27.60%
विज्ञान	6.97%	11.10%	10.60%	8.00%	7.80%
चिकित्सा विज्ञान	1.49%	11.00%	14.20%	14.50%	13.90%
इंजीनियरिंग	0.46%	40.20%	46.00%	37.40%	50.70%
एम.फिल./ पी.एच.डी.	--	0.60%	2.00%	--	--

बात के गवाह हैं कि इस प्रवृत्ति में और भी बढ़ोतरी हुई है *(ऊपर दी गई सारिणी देखें)*।

ऊपर दिए गए आंकड़ों से स्पष्ट है कि सिविल सेवा परीक्षा में तकनीकी संवर्ग के उम्मीदवारों का चयन तेजी से बढ़ रहा है। वर्ष 2009 के बाद से आईएएस में मानविकी के उम्मीदवारों के चयन की संख्या में तेजी से गिरावट आई है। वर्ष 2009 में अंतिम रूप से चयनित उम्मीदवारों में जहां इनकी संख्या 91.09% थी, वह वर्ष 2013 में घटकर महज 27.60% रह गई है। बता दें कि वर्ष 2009 में इंटरव्यू के लिए चयनित कुल उम्मीदवारों की संख्या 11,865 थी, जिनमें से लगभग 47.5% उम्मीदवार (5631) मानविकी पृष्ठभूमि से थे, लेकिन इसमें वर्ष 2010 में आश्चर्यजनक गिरावट देखी गई। इस वर्ष मानविकी पृष्ठभूमि के उम्मीदवारों का प्रतिशत 31.3% तक गिर गया, जो कुल 11237 उम्मीदवारों में से 3515 था।

वर्ष 2009 में नियुक्ति के लिए चयनित उम्मीदवारों में शैक्षणिक पृष्ठभूमि के अनुसार उच्चतम प्रतिशत मानविकी का 91.09% रहा, वहीं विज्ञान 6.97%, मेडिकल 1.49% और इंजीनियरिंग 0.46% था। यह स्थिति 2010 में पूरी तरह से बदल गई, जहां तक चयनित उम्मीदवारों की शैक्षणिक पृष्ठभूमि का सवाल है, 0.6% उम्मीदवार M.Phil / Ph.D की योग्यता रखते थे, बाकी में, 40.2% इंजीनियरिंग से थे। उसके बाद 37.1% मानविकी, 11.1% विज्ञान और 11.0% चिकित्सा विज्ञान से थे। सफल उम्मीदवारों में बड़ी संख्या (92.5%) ऐसे उम्मीदवारों की थी, जिन्होंने अपनी शैक्षणिक पृष्ठभूमि के विपरीत मानविकी को वैकल्पिक विषय के रूप में चुना, जो क्रमशः विज्ञान में 4.8%, चिकित्सा विज्ञान में 1.9% और इंजीनियरिंग में 0.8% था।

क्या हैं सफलता के कारण

सवाल उठता है कि आखिर वे कौन से कारण हैं, जिनकी वजह से सिविल सेवा परीक्षा में इंजीनियरिंग छात्रों की सफलता का प्रतिशत अचानक से बढ़ गया। परीक्षार्थी भी इसको लेकर हैरान हैं, लेकिन समझ नहीं पा रहे हैं कि ऐसा क्यों हो रहा है। हालांकि इसके लिए बहुत स्पष्ट तौर पर कोई कारण नहीं दिखता, लेकिन इस ट्रेंड को लेकर कुछ वजहें जरूरी सामने आई हैं। आइए जानने का प्रयास करते हैं कि वे वजहें क्या हैं -

सीएसएटी: पहला कारण जो दिखाई देता है, वह है सीएसएटी (सिविल सर्विसेस एप्टीट्यूट टेस्ट)। यूपीएससी ने इसे वर्ष 2011 में लागू किया। इसकी वजह से इंजीनियरिंग के विद्यार्थियों का इस तरफ रूझान बढ़ा है। इस वक्त आईएएस की परीक्षा में दो ही कंपल्सरी पेपर हैं - सीएसएटी प्रथम और सीएसएटी द्वितीय। दोनों पेपर में 200-200 अंक के प्रश्न पूछे जाते हैं। दरअसल, सीएसएटी का सारा ढांचा जीमेट, कैट, एक्सएटी और एमबीए एंट्रेंस टेस्ट के आधार पर तैयार किया गया है और ऐसा मूलतः

निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार आवश्यक

1. प्रश्न उठता है कि यदि इंजीनियरिंग संवर्ग के उम्मीदवार अपने क्षेत्र के कार्यों में रुचि नहीं लेंगे तो देश का विकास कैसे आगे बढ़ेगा ?

2. इंजीनियरिंग शैक्षणिक पृष्ठभूमि के अध्ययन में चार साल का समय और भारी-भरकम सरकारी धनराशि खर्च होती है।

ऐसे में इंजीनियरिंग पृष्ठभूमि के सफल सिविल सेवकों को उनके क्षेत्र से ही सम्बंधित कार्यदायित्व दिया जाना, एक विकल्प के रूप में देखा जा सकता है। यही बात आगे चलकर चिकित्सा शिक्षा की पृष्ठभूमि के सफल उम्मीदवारों पर भी लागू होती है, जो वर्तमान में तीसरे स्थान पर पहुंच चुके हैं।

एक उम्मीदवार के तकनीकी कौशल को ध्यान में रखकर किया गया है। यह सीएसएटी का प्रभाव ही रहा कि जो स्टूडेंट इंजीनियरिंग बैकग्राउंड से आए हैं, उनके चयन का प्रतिशत एकदम से बढ़ गया है। बता दें कि सन् 2011 में इसे लागू करने से पहले आईएएस की परीक्षा कोठारी कमीशन की रिपोर्ट के आधार पर कराई जाती थी। इसके तहत जनरल स्टडी का 150 नंबर का पेपर होता था और ऐच्छिक विषय का 300 नंबर का।

रोजगार की कमी: आज हकीकत यह है कि देशभर में कुकुरमुत्तों की तरह उग आए इंजीनियरिंग कॉलेज से निकलने वाले थोक संख्या में इंजीनियर्स के लिए असल में इतना रोजगार नहीं है कि उनमें सभी को खपाया जा सके। ऐसे में स्थायी, सम्मानजनक और वैकल्पिक रोजगार के लिए प्रशासनिक सेवा इंजीनियरों के लिए एक अच्छा विकल्प सिद्ध हुई है। इस तथ्य से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि हमारे यहां के इंजीनियरिंग कॉलेजों में शिक्षा का स्तर वैसा नहीं है। कई उद्योग घरानों ने यह बात कही है कि भारत के इंजीनियरिंग ग्रेजुएट्स में रोजगार लायक कौशल का विकास नहीं हो पाता है। यहां तक कि जो इंजीनियर कैम्पस सेलेक्शन के माध्यम से रोजगार पाते हैं, उन्हें भी यहां उतना पैसा नहीं मिल पाता है, जितना विदेशों में काम कर रहे उनके जैसे इंजीनियर्स को मिलता है। साथ ही, तकनीक के क्षेत्र में हर दिन हो रहे नए-नए परिवर्तनों के साथ सभी इंजीनियर सामंजस्य भी नहीं बैठा पाते। इसलिए वे सिविल सेवा की ओर मुड़ जाते हैं।

मानविकी से ऐच्छिक विषय लेने की सुविधा: पारम्परिक तौर पर माना जाता है कि मानविकी के विषय सिविल सेवा की परीक्षा में अच्छे नंबर दिलवाते हैं। वर्तमान में तकनीकी क्षेत्रों से बड़ी संख्या में उम्मीदवार आईएएस की परीक्षा देते हैं, उनमें भी यही ट्रेंड बना हुआ है। दरअसल, आईएएस की मुख्य परीक्षा के लिए अमूमन इंजीनियरिंग के विद्यार्थी भी मानविकी से ही विषय चुनते हैं। इससे उन्हें दो तरह से फायदा होता है। एक तो तकनीकी के विषय की गहरी समझ होने के कारण उनको मानविकी के विषयों को समझने में आसानी होती है और दूसरे, रीजनिंग और एप्टीट्यूड जैसे विषय को वे अन्य परीक्षार्थियों की तुलना में आसानी से समझ पाते हैं।

कॅम्पटीशन की प्रवृत्ति: इंजीनियरिंग से आए विद्यार्थियों के लिए प्रतिस्पर्धा या कॅम्पटीशन कोई नई बात नहीं होती। वे इंजीनियरिंग में भी प्रतियोगी परीक्षा में सफल होने के बाद ही प्रवेश पाते हैं। उन्हें इस तरह की परीक्षाओं का पूरा अनुभव होता है। इनमें से कई सारे परीक्षार्थी जेईई और आईआईटी से निकले हुए होते हैं। अच्छे कॉलेजों में भी एंट्रेंस एक्जाम होते ही हैं। ऐसे में वे प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार रहते हैं और उसमें सफलता हासिल करने की टेक्निक भी जानते हैं। दूसरी ओर मानविकी में मेरिट के आधार पर प्रवेश हो जाता है। ऐसे छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं का कोई अनुभव भी नहीं होता है, इसलिए वे उनकी तकनीक भी नहीं पकड़ पाते हैं।

स्पष्ट नजरिया: तकनीकी पृष्ठभूमि से होने के कारण इंजीनियरिंग छात्रों का नजरिया एकदम पिन-पॉइंटेड होता है, इसलिए वे परीक्षा की तैयारी भी वैज्ञानिक तरीके से करते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो वे सिलेबस और परीक्षा के पैटर्न को बेहतर तरीके से समझते हैं। इंजीनियरिंग स्टूडेंट की खासियत होती है कि वे सवालों के ज्यादा एक्यूरेट जवाब दे पाते हैं। दूसरी ओर मानविकी के छात्रों का दृष्टिकोण एनेलेटिकल ज्यादा होता है, इसलिए वे प्रतियोगी परीक्षा में पिछड़ जाते हैं। ऐसे में इंजीनियरिंग के स्टूडेंट्स के लिए प्रशासनिक सेवा में सफलता के लिए कई तत्व मददगार होते हैं। वे सिविल सेवा परीक्षा देने से पहले ही अपने ग्रेजुएशन लेवल पर परीक्षा में सफलता की तकनीक, परीक्षा का पैटर्न और पढ़ाई करने के तरीके सीख चुके होते हैं। यही कारण है कि किसी भी प्रतियोगी परीक्षा में इन छात्रों के सफल होने में खास कठिनाई नहीं होती।